भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

मासिक साहित्य पत्रिका

वर्ष-५, अंक-५५, फरवरी-२०२६

वसंत ऋतु

www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा™

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष-५, अंक-५५, फरवरी-२०२६

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य आपका कीमती समय

फरवरी २०२६

साका कैलेण्डर-१९४७, विक्रम संवत-२०८२, अयान-उत्तरायण, ऋतु-शिशिर

सोम	02 फाल्गुन कृ. प्रतिपदा	09 फाल्गुन कृ. अष्टमी, मासिक कृष्ण जन्माष्टमी	16 फाल्गुन कृ. चतुर्दशी	23 फाल्गुन शु. षष्ठी, स्कन्द षष्ठी
मंगल	03 फाल्गुन कृ. द्वितीया	10 फाल्गुन कृ. अष्टमी	17 फाल्गुन कृ. अमावस्या, दर्श अमावस्या, द्वापर युग आरंभ	24 फाल्गुन शु. सप्तमी, मासिक दुर्गा अष्टमी
बुध	04 फाल्गुन कृ. तृतीया	11 फाल्गुन कृ. नवमी	18 फाल्गुन शु. प्रतिपदा	25 फाल्गुन शु. नवमी, रोहिणी व्रत
गुरू	05 फाल्गुन कृ. चतुर्थी, द्विजप्रिय संकष्टी चतुर्थी	12 फाल्गुन कृ. दशमी, महर्षि दयानन्द सरस्वति जंयती	19 फाल्गुन शु. द्वितीया, फुलेरा दूज, शिवाजी महाराज जंयती	26 फाल्गुन शु. दशमी
शुक्र	06 फाल्गुन कृ. पंचमी	13 फाल्गुन कृ. एकादशी, विजया एकादशी व्रत	20 फाल्गुन शु. तृतीया	27 फाल्गुन शु. एकादशी, आमलकी एकादशी व्रत
शनि	07 फाल्गुन कृ. षष्ठी	14 फाल्गुन कृ. द्वादशी, शनि प्रदोष व्रत	21 फाल्गुन शु. चतुर्थी, ढुण्ढिराज चतुर्थी	28 फाल्गुन शु. द्वादशी, नृसिंह द्वादशी
रवि	01 माघ शु. पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत	08 फाल्गुन कृ. सप्तमी	15 फाल्गुन कृ. त्रयोदशी, महा शिवरात्रि	22 फाल्गुन शु. पंचमी

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

राष्ट्र चेतना के ऋषि - स्वामी दयानन्द सरस्वती

12 फरवरी 1824 को मूल नक्षत्र में पैदा होने पर बचपन वाले **मूलशंकर, बाद में स्वामी पूर्णानंद सरस्वती** से सन्यास ग्रहण कर, उनको अपना **गुरु मान मूलशंकर से दयानन्द सरस्वती** बने। इन्होनें बाद में वेदों का गहन अध्ययन के लिये मथुरा में वेदों के **प्रकाण्ड विद्वान् प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द** के पास पहुँच फिर उनसे वेदों की शिक्षा ग्रहण की तथा उन्हीं से आज्ञा प्राप्त करके इन्होनें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ **'सत्यार्थ प्रकाश'**, मूल रूप में हिन्दी भाषा में रचना की तथा **चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सम्वत् 1932 (सन् 1875) को गिरगांव, मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की**। वे आधुनिक भारत के महान चिंतक, समाज सुधारक और देशभक्त उन्होंने वेदों की सत्ता को सदा सर्वोपरि माना। **स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी ने देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन की 1857 में हुई क्रान्ति में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने वर्ष 1855 में इस क्रान्ति के कर्णधार नाना साहेब, तात्या टोपे, अजीमुल्ला खान, बाला साहब व बाबू कुँवरसिंह से हरिद्वार में मुलाकात कर देश में सशस्त्र क्रान्ति की आधारशिला तैयार की। हरिद्वार में ही 1855 की बैठक में बाबू कुँवरसिंह** ने जब अपने इस संघर्ष में सफलता की सम्भावना के बारे में स्वामी से पूछा तो उनका बेबाक उत्तर था स्वतन्त्रता संघर्ष कभी असफल नहीं होता। **भारत धीरे-धीरे एक सौ वर्ष में परतन्त्र बना है।** अब इसको स्वतन्त्र होने में भी एक सौ वर्ष लग जायेंगे। इस स्वतन्त्रता प्राप्ति में बहुत से अनमोल प्राणों की आहुतियाँ डाली जायेंगी। **उनका यह कथन एकदम सही साबित हुआ। देश को आजाद होने में नब्बे साल और लग गए और इसके लिए सैकड़ों लोगों ने अपने प्राणों का आहुति दी।** उनका आदर्श था- **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** अर्थात हम पूरे विश्व को श्रेष्ठ बनाएँ, हम पूरे विश्व में श्रेष्ठ विचारों का, मानवीय आदर्शों का संचार करें और इस सिद्धान्त

के लिये संचार करें और इस सिद्धान्त के लिये उन्होंने जिस तरह से **बाल विवाह और बहुविवाह का विरोध किया, अन्धविश्वासों और कुरीतियों को दूर करने** के लिए काम किया और सार्वभौमिक शिक्षा का प्रस्ताव रखा ये सब रुढ़िवादीयों को पसन्द नहीं आ रहा था। फलत: इनकी हत्या व अपमान के लगभग 44 प्रयास हुये **[जिसमें से 17 बार विभिन्न माध्यमों से विष देकर]** लेकिन जैसा आप सभी जानते हैं - **लाभ हानि जीवन मरण जश अपयश विधि हाथ लेकिन फिर भी इनकी मृत्यु नहीं हुई।**

वर्ष **1883 में वे जोधपुर नरेश महाराजा जसवन्त सिंह** के निमन्त्रण पर जोधपुर आए हुए थे। वहाँ उनके नित्य ही प्रवचन होते थे। यदाकदा महाराजा जसवन्त सिंह भी उनके प्रवचन सुनते। दो-चार बार स्वामी भी राज्य महलों में गए। वहाँ पर उन्होंने नन्ही नामक वेश्या का अनावश्यक हस्तक्षेप और महाराजा जसवन्त सिंह पर उसका अत्यधिक प्रभाव देखा। स्वामी दयानन्दजी को यह सब बहुत बुरा लगा। उन्होंने महाराजा को इस बारे में समझाया तो उन्होंने विनम्रता से उनकी बात स्वीकार कर ली और नन्ही से सम्बन्ध तोड़ लिए। इससे नन्ही स्वामी दयानन्दजी से नाराज हो गई और उन्हें राह का रोड़ा मान उनको हटाने की जुगत भिड़ाने में जुट गई। **उसने स्वामी दयानन्दजी के रसोइए कलिया उर्फ जगन्नाथ को अपनी तरफ मिला कर उनके दूध में पिसा हुआ काँच डलवा दिया।** खासियत की बात यह रही कि काँच मिश्रित दूध पिलाने के बाद नन्ही को बहुत पछतावा हुआ और उसने स्वामी दयानन्दजी के पास जाकर अपना अपराध स्वीकार किया। नन्ही ने स्वामीजी से माफी माँगी तो उदार हृदय के साथ उन्होंने उसे क्षमा करते हुए कुछ पैसे देकर जोधपुर से चले जाने को कहा ताकि वह सजा से बच सके। बाद में स्वामी दयानन्दजी को जोधपुर के अस्पताल में भर्ती करवाया गया। बाद में जब स्वामी दयानन्दजी की तबीयत बहुत खराब होने लगी तो उन्हें अजमेर के अस्पताल में ले जाया गया, लेकिन तब तक काफी विलम्ब हो चुका था। इस तरह बीमार हुए स्वामीजी कभी

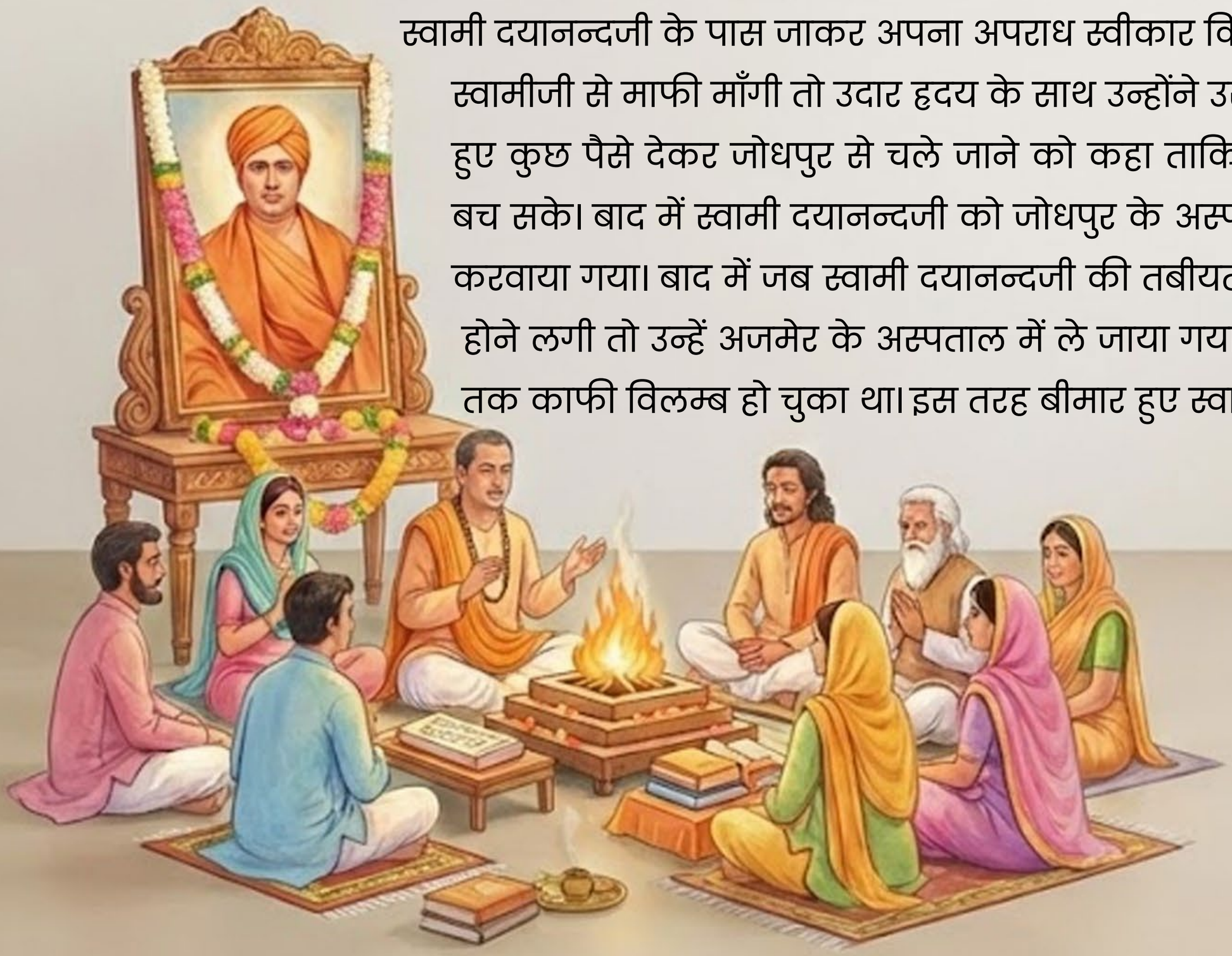

उबर नहीं पाए **और दीपावली के दिन उन्होंने देह त्याग दी।** अन्त में उनके **अतुलनीय योगदान को याद करते हुये इनकी 202वीं जयन्ती पर शत्-शत् नमन् करते** हुए बताना चाहता हूँ **कि वे ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारत भारतीयों के लिये है को बताते हुए सबसे पहले अपने अर्थात भारतीय मुक्ति संग्राम हेतु स्वराज्य शब्द का न केवल प्रयोग किया बल्कि इसकी महत्ता भी समझायी।**

इसके अलावा **हिन्दी भाषा के प्रबल समर्थक स्वामी दयानन्दजी** का कहना था कि **"मेरी आंख तो उस दिन को देखने के लिए तरस रही है, जब कश्मीर से कन्याकु-मारी तक सब भारतीय एक भाषा बोलने और समझने लग जायेंगे"**, लेकिन **जोधपुर की एक वेश्या की नाराजगी आर्य समाज प्रणेता और महान समाज सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी पर बहुत भारी पड़ी और उसके चलते उन्हें आखिरकार अपनी जान तक गँवानी पड़ी।**

– गोवर्द्धन दास बिन्नाणी जी, 'राजा बाबू', बीकानेर

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पठनीय-श्रवणीय-दर्शनीय है । पत्रिका में दिए गए ऑडियो-वीडियो का निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

8610502230

(केवल संदेश हेतु)

कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका संदेश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं.पंजीकृत हो जाएगा।

भारतीय परम्परा की मासिक ई-पत्रिका

नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!

- व्हाट्सएप और टेलीग्राम पर प्रत्येक माह के प्रारम्भ में **ई-पत्रिका का नया अंक** प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक प्राप्त न हुआ हो, तो कृपया हमें सूचित करें।

- ई-पत्रिका प्राप्त करने के लिए दिए गए **नंबर 7303021123** को अपने मोबाइल में सेव करें और **व्हाट्सएप एवं टेलीग्राम ग्रुप** से जुड़ें।

- पत्रिका में जहाँ भी **सोशल मीडिया आइकॉन** दिए गए हैं, उन पर स्पर्श करने से आप सीधे संबंधित लिंक पर पहुँच सकते हैं।

- यदि ई-पत्रिका में कोई **त्रुटि नज़र आए तो कृपया हमें अवगत कराएँ।** साथ ही, यदि पत्रिका आपको पसंद आए तो इसे अपने **परिवार और मित्रों के साथ साझा करें।**

- भारतीय परंपराओं को संरक्षित रखने एवं पत्रिका को और **अधिक सुरुचिपूर्ण** बनाने के लिए **आपके सुझाव और विचार** हमारे लिए अत्यंत मूल्यवान हैं।

- आप अपने क्षेत्र/समुदाय में हो रहे **पारंपरिक आयोजन या विशेष लेख** भी हमें भेज सकते हैं, ताकि उन्हें आगामी अंकों में प्रकाशित किया जा सके।

- पत्रिका को और उपयोगी बनाने के लिए **विषय-वस्तु** पर आपके सुझाव **(जैसे – विशेषांक, लोककथाएँ, परंपरागत पर्व या व्यंजन)** हमें अवश्य लिखें।

महाशिवरात्रि का महत्व

भारतीय हिंदू संस्कृति, परंपराओं एवं सनातन धर्म में महाशिवरात्रि का पर्व अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस दिन भगवान शिव की विशेष पूजा एवं आराधना की जाती है। हमारे देश के सांस्कृतिक मान्यता के अनुसार 33 करोड़ देवी–देवताओं में **भगवान श्री शिव शंकर को ही सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक एवं सभी देवी–देवताओं का सर्वोच्च देव माना जाता है।**

महादेव सौम्य एवं रौद्र दोनों रूपों के अधिपति हैं। माना जाता है कि सृष्टि की उत्पत्ति एवं संहार के सभी पक्ष भगवान शिव के अधीन हैं। त्रिदेव–ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों ही शिव रूप के भाग हैं। आकाश और पाताल तीनों लोकों के आदि देव महादेव हैं।

शिव पुराण में उल्लेखित एक मान्यता के अनुसार **भगवान शिव का विवाह देवी पार्वती के साथ इसी दिन हुआ था। महाशिवरात्रि के दिन ही भगवान महादेव ने वैराग्य को त्याग कर गृहस्थ जीवन में माता पार्वती के साथ विवाह कर लिया था।** शिव के भक्त इस दिन को विवाह के उत्सव की तरह मनाते हैं।

"शिव" शब्द का शाब्दिक अर्थ है कल्याणकारी और "रा" का अर्थ है दानार्थ धातु; इन दोनों के मेल से शिवरात्रि शब्द बना है, जिसका अर्थ है वह रात्रि जो सुख एवं कल्याण देती है। मान्यता के अनुसार सृष्टि का प्रारंभ भी इसी दिन से हुआ था।

महाशिवरात्रि पूजा विधि

❖ **प्रातः स्नान एवं संकल्प** - महाशिवरात्रि के दिन प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान करें। स्वच्छ वस्त्र धारण कर पूजा स्थल को शुद्ध करें। हाथ में जल, अक्षत और पुष्प लेकर भगवान शिव के व्रत-पूजन का संकल्प लें।

❖ **शिवलिंग की स्थापना** - घर के मंदिर में या स्वच्छ स्थान पर शिवलिंग या शिव की प्रतिमा स्थापित करें। उत्तर या पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें।

❖ **पंचामृत से अभिषेक** - शिवलिंग का अभिषेक क्रमशः **जल → दूध → दही → घी → शहद → गंगाजल से करें। अभिषेक करते समय मंत्र जपें**– **ॐ नमः शिवाय**

❖ **बेलपत्र अर्पण** - भगवान शिव को बेलपत्र अत्यंत प्रिय है। तीन पत्तों वाला बेलपत्र चढ़ाते समय यह मंत्र बोलें–

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रियायुधम्।
त्रिजन्म पाप संहारं एकबिल्वं शिवार्पणम्॥

❖ **धतूरा, भस्म और पुष्प** - शिवलिंग पर धतूरा, आक के फूल, सफेद पुष्प और भस्म अर्पित करें। यह शिव के वैराग्य और तपस्वी स्वरूप का प्रतीक है।

❖ **धूप-दीप एवं नैवेद्य** - धूप और दीप जलाएँ। फल, मिष्ठान्न या सात्विक भोग अर्पित करें।

❖ **महामृत्युंजय मंत्र जप** - महाशिवरात्रि पर इस मंत्र का विशेष महत्व है–

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

❖ **रात्रि जागरण** - रात्रि में शिव भजन, कीर्तन और नाम स्मरण करें। मान्यता है कि इस रात्रि जागरण से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है।

❖ **व्रत पारण** - अगले दिन स्नान के बाद शिव पूजन कर ब्राह्मण या जरूरतमंद को दान देकर व्रत का पारण करें।

राशि अनुसार शिवलिंग पर क्या अर्पित करें? www.

मुक्तक –

1) महाशिवरात्रि पर्व है, भज लो भोले नाथ।
गौरा साथ विराजती, गणपति रहते साथ॥
भोले का पूजन करूँ, महिमा गाती रोज।
विनती उनसे मै करूँ, मरूँ पकड़ के हाथ॥

2) भोले हरते है सदा, भक्त जनों की पीर।
बेलपत्र, आक, धतूरा और चढ़ाओ नीर॥
जाप करे शिव स्त्रोत का, और झुकाओ शीश।
झोली भरते नेह से, मन में राखो धीर॥

3) भाल बिराजे चंद्रमा, शीश गंगा की धार।
तन पर भस्मी है रमी, बैठे गिरी की खार॥
कंठ में सर्प सोहते, कटि में मृग की छाल।
जंघा सोहे गनपती, गौरा जैसी नार॥

दोहे –

1) शिव महिमा है अपार, पूजन कर लो आप।
शिवपूजन मन से करो, होगा बेड़ा पार॥

2) शिव हैं दया के सागर.. करते जन को प्यार।
सुनो डमरू की नाद को यह सब का आधार॥

3) करें कल्याण भारत का, ऐसा दो वरदान।
शीश झुकाऊं चरणों में, करती हूं मैं गान॥

– अधिवक्ता उषा चतुर्वेदी जी, भोपाल (म. प्र.)

सृष्टि के आरम्भ में ही **भगवान विश्वकर्मा ने अड़सठ तीर्थों और उन्नीस पुण्य - कूपों के सहित सम्भल तीर्थ का निर्माण किया था। सत्ययुग में इसका नाम 'सत्यव्रत', त्रेता में 'महद्गिरि', द्वापर में 'पिंगल' और अब कलियुग में 'शम्भल' है। शम्भल आजकल 'सम्भल' नाम से प्रसिद्ध है।** सम्भल - माहात्म्य और अन्य पुराणों में भी **तालव्य शकार से 'शम्भल'** नाम का उल्लेखनीय है, आजकल दन्त्य मकार वाला **'सम्भल'** नाम ही प्रचलित है। यह इसलिए है क्योंकि कुछ लोग तालव्य **'शकार'** का उच्चारण नहीं कर पाते। ऐसा माना जाता है **कि 'शम्भल' और सम्भल' दोनों 'शम्भ्वालय' शब्द के अपभ्रंश हैं।** शम्भ्वालय शब्द से **'शम्भु का आलय'** अर्थ स्पष्ट ध्वनित होता है। इसे गुप्त रखने के लिए ही इस स्थान को **'शम्भल'** कहा जाता है।

सम्भल अति प्राचीनकाल से पावन भगवद्धाम के रूप में प्रसिद्ध रहा है। आधुनिक शोधकर्ताओं ने भी इस पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला है। प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर छठी शताब्दी में हर्ष के शासनकाल में सम्भल में ब्राह्मणों की प्रधानता थी और उनके माध्यम से ज्ञान का सूर्य सम्भल में उदयाचल के शिखर पर चमक रहा था।

डॉ ब्रजेन्द्रमोहन शांख्यधर के अनुसार ईसा की बारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में **पृथ्वीराज चौहान** का सम्भल में आधिपत्य था तथा उनकी **पुत्री बेला वहाँ सती हुई** थी। उन्होंने शत्रुओं पर आक्रमण करने के लिए और उनके आक्रमणों से बचने के लिए उन्होंने सम्भल को अपनी राजधानी भी बनायी थी। प्रसिद्ध है कि यहाँ सुरंगों के माध्यम से अपनी रक्षा का प्रबंध किया गया था। यहाँ दिल्ली, अजमेर और कन्नौज को जाने वाली सुरंगें थीं। खुदाई होने पर अब कहीं-कहीं उनके चिह्न मिलते हैं।

सम्भल - माहात्म्य के पढ़ने से ज्ञात होता है कि पूरा सम्भल हरि - मंदिर ही है। इसके तीनों कोनों पर **तीन शिवलिंग स्थापित हैं। दक्षिण में सम्भलेश्वर, पूर्व में चन्द्रेश्वर और उत्तर में भुवनेश्वर।** इन तीन कोनों वाले सम्भल की बाहरी परिक्रमा चौबीस कोस की है। प्रत्येक कार्तिक शुक्लपक्ष की चतुर्थी-पंचमी को इस परिक्रमा में हजारों नर-नारी सम्मिलित होते हैं। इसके **बारह कोस के भीतरी क्षेत्र में अड़सठ तीर्थ और उन्नीस कूप हैं।** इसके इतने बड़े **आकार में ब्रह्मा जी का निवास** है। इसके ठीक **मध्य में तलवार हाथ में लिये, घोड़े पर सवार श्रीकल्कि भगवान् की दिव्यमूर्ति** से सुशोभित **'हरिमंदिर'** था, जिसे मध्यकाल में

विधर्मी आक्रांताओं द्वारा ध्वस्त कर दिया गया। बाद में **इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर** ने इस स्थान के निकट **एक बैष्णव मंदिर का निर्माण करवाया, जो अब श्रीविष्णु कल्कि मंदिर नाम से प्रसिद्ध हैं।**

कल्कि पुराण तृतीय अंश. 18 अध्याय, श्लोक 4 में स्पष्ट उल्लेख है –

यत्राष्टषष्टितीर्थानां सम्भवः शम्भलेभवत्।
मृत्योर्मोक्षः क्षितौ कल्केरकलस्य पदाश्रयात्।

अर्थात् जहाँ अड़सठ तीर्थों का सम्भव हुआ है, वह तीर्थ शिरोमणि सम्भल भगवान् कल्कि के चरणों के प्रताप से मोक्ष का धाम है।

कल्कि पुराण में कल्कि भगवान के सम्भल में अवतरण की विस्तृत कथा वर्णित है। श्लोक 1/1/15 कहता है –

प्रलयान्ते जगत्स्त्रष्टा ब्रह्मा लोकपितामहः।
ससर्ज घोरं मलिनं पृष्ठदेशात्स्वपातकम्॥

प्रलयकाल के अंत में जगत की **सृष्टि करने वाले लोक पितामह ब्रह्मा अपनी पीठ से भयंकर मलिन पातक की सृष्टि की,** वह अधर्म नाम से विख्यात हुआ। उस अधर्म का प्रचार आरम्भ होते ही सब देवता दुखी होकर श्रीनारायण को भूमण्डल की दुर्दशा सुनाते हैं। तब विष्णु भगवान सम्भल (उत्तर प्रदेश) में विष्णुयशा ब्राह्मण के यहाँ अपने अवतार का वचन देते हैं। **लक्ष्मी जी सिंहलद्वीप में बृहद्रथ राजर्षि की धर्मपत्नी कौमुदी की कोख से जन्म लेती हैं। इनका नाम 'पद्मा' है।**

कल्कि भगवान का वैशाखमास के शुक्लपक्ष की द्वादशी के दिन कन्या – लग्न में अवतार होता है। भगवान चतुर्भुजरूप से माता-पिता को दर्शन देकर ब्रह्मा जी की प्रार्थना से द्विभुज रूप धारण करते हैं।

भगवान शिव के द्वारा भेजे गए वेदमय शुक के माध्यम से सिंघलद्वीप में पद्मावती के स्वयंवर का समाचार प्राप्त कर श्रीकल्कि भगवान उस स्वयंवर में पधारे। वहाँ लष्मीरूपिणी के साथ श्रीकल्कि भगवान का विवाह – संस्कार सम्पन्न हुआ। पद्मावती को साथ लेकर भगवान कल्कि ने विश्वकर्मा द्वारा सुसज्जित सम्भल नगर में प्रवेश किया। श्रीहरि की यह अवतारकथा परममंगलकारिणी है, जैसा कि कल्कि पुराण में कहा गया है –

अवतारं महाविष्णोः कल्केः परममद्भुतम्।
पठतां श्रृण्वतां भक्त्या सर्वाशुभविनाशनम्।

(कल्कि पुराण 3/20/16)

'कल्कि महाविष्णु के परम अद्भुत अवतार की यह कथा भक्तिपूर्वक पढ़ने और सुननेवालों के सभी अमंगलों का नाश करने वाली है। '

कल्किपुराण में भगवान कल्कि से प्रार्थना की गई है -

शश्वत्सैन्धववाहनो द्विजजनिः कल्किः परात्माहरिः।
पायात् सत्ययुगादिकृत स भगवान धर्मप्रवत्तिप्रियः॥

(कल्कि पुराण 1/1/3)

'घोड़ा ही जिनका सनातन वाहन है, जो सत्ययुग के आदिकर्ता हैं, धर्म की प्रवृत्ति जिन्हे प्रिय है और जो ब्राह्मण - वंश में अवतीर्ण होंगे, ऐसे कल्कि नाम से विख्यात परात्मा भगवान श्रीहरि जगत् की रक्षा करें।'

-गौरीशंकर वैश्य जी, 'विनम्र', आदिलनगर, विकासनगर (लखनऊ)

भारतीय परम्परा™

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा

की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट

पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा एवं संस्कृत कथा साहित्य

एक वैदिक उक्ति है– **"आ नो भद्राः क्रतवो यंतु विश्वतः"**–**अर्थात सभी दिशाओं से विचारों को आने दो।** हर युग की अपनी ऐतिहासिक सीमा में तर्कसम्मत विचारों की खोज हुई है। उनका संबंध **मानव-स्मृतियों के साथ-साथ नए-नए स्वप्नों** से भी रहा है। **भारतीय साहित्य में स्वच्छंदता** की आवाज़ों का एक लंबा सिलसिला दिखाई देता है। स्वच्छंदता एक सनातन प्रतिपक्ष है, जिसका लक्ष्य विभिन्न युगों की ऐतिहासिक सीमाओं में मानवतावादी पुनर्निर्माण रहा है।

उपनिषदें आपस में श्रेष्ठता के लिए संघर्षरत वैदिक देवताओं के भौतिकवाद की प्रतिपक्ष हैं। इन्होंने वेदांत का प्रतिपादन किया, जो अखंडता का संदेश देते हुए कहता है– **"तत्त्वमसि"**– **अर्थात जो तू है वही मैं हूँ।** भारतीय ज्ञान परम्परा पर चर्चा करते समय यह देखना आवश्यक है कि उसमें विचारों की स्वतंत्रता के लिए कितनी जगह है। भारतीय ज्ञानियों का यह विश्वास रहा है– **"वादे-वादे जायते तत्त्वबोधः"**–अर्थात **अहंकार से मुक्त संवाद ही सत्य का बोध** कराता है। एक अन्य महत्वपूर्ण कथन है– **"सत्य का मुख स्वर्ण पात्र से ढका है" (ईशावास्योपनिषद)।** इन दोनों कथनों से यह निष्कर्ष निकलता है **कि ज्ञान और अहंकार परस्पर विरोधी हैं।** इसी प्रकार **ज्ञान और भोग-विलास भी विपरीत प्रवृत्तियाँ हैं। ज्ञान परम्परा पर भाषण देना और ज्ञान परम्परा पर चलना**–ये दोनों भिन्न बातें हैं।

प्राचीन भारतीय समाज एवं संस्कृति ने आध्यात्मिक ज्ञान को अत्यधिक महत्त्व प्रदान किया है। भारतीय ज्ञान परम्परा में विश्व की सर्वाधिक समृद्ध बौद्धिक सम्पदा निहित है। इस अविरल ज्ञान परम्परा का प्रवाह वैदिक वाङ्मय से लेकर समकालीन चिंतन तक निरंतर विद्यमान रहा है। इसमें **दर्शन, नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र, काव्यशास्त्र तथा राजनीतिशास्त्र** जैसी विविध विधाओं का अध्ययन होता रहा है। भारतीय दर्शन विचारों का ऐसा समुच्चय है, जिसने लगभग दो हजार वर्षों तक न केवल भारतीय उपमहाद्वीप, बल्कि एशिया महाद्वीप के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक परिवेश को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया।

भारतीय दर्शन की अविरल परम्परा में धर्म, राजनीति, न्याय, विधि, शासन और समाज से संबंधित विचारों का गहन विश्लेषण किया गया है। इसने न केवल आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन की रूपरेखा प्रस्तुत की, बल्कि राजनैतिक दृष्टि से भी समाज के संचालन

की दिशा निर्धारित की। यद्यपि समय के साथ पश्चिमीकरण ने भारतीय ज्ञान परम्परा को प्रभावित किया, तथापि **भारत सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020** के माध्यम से भारतीय ज्ञान परम्परा को पुनः स्थापित करने का सार्थक प्रयास किया जा रहा है। इसके द्वारा समाज में भारतीय दर्शन एवं विचारधारा की महत्ता को पुनः प्रतिष्ठित करने की दिशा में ठोस कदम उठाए जा रहे हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा का इतिहास अत्यंत समृद्ध एवं गौरवमयी रहा है, जिसने विश्व की अनेक सभ्यताओं को प्रभावित किया है। इस परम्परा में समाहित संस्कृत कथा साहित्य के सामाजिक, राजनैतिक और नैतिक सिद्धांतों का गहन अध्ययन, अनुशीलन और विश्लेषण समकालीन समस्याओं के समाधान में सहायक सिद्ध हो सकता है।

विश्व कथा साहित्य में संस्कृत का कथा साहित्य सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। कथा साहित्य का उद्गम स्रोत भारतीय कथा साहित्य को ही माना जाता है, इसलिए इसे **कथा साहित्य का जनक** भी कहा जाता है। भारतीय कथा साहित्य में संस्कृत कथा साहित्य का विशिष्ट स्थान है। इन कथाओं में भारतीय दर्शन, संस्कृति, लोक-व्यवहार तथा जीवन-पद्धति की सजीव झाँकी मिलती है।

भारतवर्ष के विविधतापूर्ण वातावरण में विस्मय और कौतुहल का व्यापक प्रसार हुआ है। मानव स्वभावतः जिज्ञासु प्रवृत्ति का होता है और इसी जिज्ञासा को संस्कृत कथा साहित्य में प्रभावी रूप से अभिव्यक्त किया गया है।

संस्कृत साहित्य में कथाएँ केवल मनोरंजन या कौतुक के लिए ही नहीं, बल्कि **धार्मिक, नैतिक और सामाजिक शिक्षण** के लिए भी प्रयुक्त की गई हैं। इनमें पशु-पक्षियों एवं अन्य जीवों को मानवीय प्रतीकों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसी कारण **आबाल-वृद्ध सभी वर्ग संस्कृत कथा साहित्य की मनोहरता से सहज रूप से आकर्षित होते हैं।**

- डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता जी, सहायक आचार्य, अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, गंगापुर सिटी (राजस्थान)

लिख दिए मैंने सारे गीत– तुम्हारे नाम।

कुछ ग़म, कुछ खुशियों के,
कुछ नम इन अँखियों के।
कुछ दूब पर धूप-सी,
कुछ शबनम सखियों के।

लिख दिए मैंने गीत-पर्व– तुम्हारे नाम।

कुछ जीत, कुछ हार के,
कुछ मौसम की मार के।
कुछ बहार, कुछ पतझड़,
कुछ फूल, कुछ ख़ार के।

लिख दिए मैंने शेष बसंत– तुम्हारे नाम।

रस, छंद, लय, ताल भी,
शब्दों के कुछ जाल भी।
मिलन के सुखद क्षण भी,
विरह के कुछ साल भी।

लिख दिए मैंने अश्क़-नैन– तुम्हारे नाम।

गीतों के ये सफ़र भी,
बिंबों से हमसफ़र भी।
भाव की हर शाम भी,
शिल्प की हर सहर भी।

लिख दिए मैंने स्वप्न-गाँव– तुम्हारे नाम।

- अशोक आनन जी, मक्सी, शाजापुर (मध्य प्रदेश)

ठंडी हवाएं

ठंडी हवाएं थरथरी लाएं
महिना दिसंबर सबको, खूब लुभाएं
ओ हो...
ठंडी हवाएं ...

खेतों ने ओढ़ा पीला दुपट्टा
खेतों ने ओढ़ा पीला दुपट्टा
धरती का दिखता प्यारा मुखौटा
ओ, बातें करें हैं सबसे चारों दिशाएं
ठंडी हवाएं...

पेड़ों से टपके ओस की बूंदें
पेड़ों से टपके ओस की बूंदें
खड़े हैं पशु सब आंखें मूंदें
ओ, कोहरे का आलम राह भुलाएं
ठंडी हवाएं...

अलावों की मची है भरमार देखो
अलावों की मची है भरमार देखो
सूनी छतें बनी अब गुलजार देखो
ओ, गुनगुनी धूप हर तन को भाये
ठंडी हवाएं...

- व्यग्र पाण्डे जी (कवि/लेखक), गंगापुर सिटी (राज.)

श्रृंगार

यौवन के आकाश में, सुरधनुषी उल्लास।
प्रणय-गंध ले बाँटती, मुट्ठी भर वातास।।

मेहँदी वाले हाथ में, दिखा गुलाबी फूल।
उसे मिलेगा फूल यह, जिस पर प्रभु अनुकूल।।

मेहँदी रंजित हाथ हों, अधरों पर मुस्कान।
मदमाते दो नयन हों, मौन निमंत्रण जान।।

आँखें पत्थर-सी हुईं, प्रिय-दर्शन की आस।
हाथ छोड़ मेहँदी करे, अब कुंतल में हास।।

विरही मन धीरज धरो, करो न आर्त्त-पुकार।
आएगी प्रिय उर्वशी, है यदि सच्चा प्यार।।

चंचल चपला की चली, चम-चम-चम तलवार।
चिहुँक चंद्रवदना जगी,इत-उत रही निहार।।

गोरी ने मुख पर पड़े, झटकाए जब केश।
लगा मेघ की ओट से, मुस्काया सोमेश।।

-वसंत जमशेदपुरी जी, जमशेदपुर (झारखण्ड)

धर्म वही है- जिसे धारण किया जा सके। नदी का धर्म- प्यासे को पानी पिलाना, वृक्ष का धर्म है- राहगीर को छाया देना, और शिक्षक का धर्म है- विद्यार्थियों को सही ज्ञान की शिक्षा प्रदान करना अर्थात् **कर्तव्य का ही दूसरा नाम है- धर्म।**

"कार्य ही पूजा है" इसका आशय भी यही है, कि व्यक्ति अपने कर्म का निर्वहन निष्ठापूर्वक, कर्तव्य भावना के साथ करे तो यह भी धर्म से कम नहीं है।

कर्म को पूजा या उपासना समझकर करना ही सच्चा धर्म है।

जो भी काम (कर्म) आपको मिला है, हो सकता है आपकी रुचि के अनुरूप न हो परन्तु काम के अनुरूप यदि आप अपनी रुचि बना लेंगे तो उसमें आनंद प्राप्त होगा।

एक सफाई कर्मी- उसका नाम संतोष है, से पूछा गया, **"तुम नहा-धोकर यह सफाई का काम क्यों करते हो। बाद में नहा लिया करो"** संतोष ने जवाब दिया- **"आप बिना नहाएं पूजा कर सकते है? नहीं न, तो यह काम ही मेरी पूजा है।"** कितनी सुन्दर बात है। काम को ही पूजा मान लिया तो फिर उसका सुफल भी अवश्य मिलेगा, काम को पूरे मन से करने में भी आनंद है। जो संतोष मिलता है वह अनुपम है। **आधे-अधुरे मन से किया गया कार्य कभी सफल नहीं होता है। अपने मन से काम में खो जाने पर ही सच्चे सुख से आनंद आता है।**

हर कोई हर काम नहीं कर सकता। लोहार सुनारी नही कर सकता है, न सुनार लोहारी कर सकता है। सही व्यक्ति को सही काम ही मिलना चाहिए। हर काम को करने का समय होता है। **अलग-अलग समय पर अलग-अलग कर्म अलग-अलग धर्म का निर्माण करते हैं।**

काम एक ही होता है, उसको करने के तरीके अनेक होते हैं। हर व्यक्ति अपना काम अपने ढंग से करता है। कोई तेजी से करता है, तो कोई धीरे-धीरे काम करता है, कोई कुशलता से करता है, तो कोई बेगार टालता है, अतः **कर्म अच्छे करेंगे तो मन शांत रहेगा,** बल्कि आपकी सेहत भी सही रहेगी। इसलिए **आपको जो काम पसंदीदा है, वही कर्म आपका धर्म बनता है,** अपने कर्म करने के दौरान नकारात्मक विचार ना लाए। जब हम किसी कार्य को करते हैं, तब किसी के प्रति द्वेष भाव नहीं रखे, जब सच्चे वह ईमानदारी से काम करते हैं, तो यही हमारा धर्म है।

निष्काम भाव से कर्म करते रहना ही सबसे बड़ा धर्म है। गीता में कहा गया है, **"कर्म करते**

रहो फल की इच्छा मत करो।" पर ऐसा होता कहाँ है ? सारे काम फल की इच्छा से ही किए जाते है। दान-पुण्य इसलिए कि स्वर्ग में सीट आरक्षित रहेगी। नेकी का काम इसलिए कि उससे लोकप्रियता मिले, प्रचार, यश-कीर्ति, प्रशंसा मिले। **धर्म की रक्षा करना** और उसको धारण करना श्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि जीवन का ध्येय धर्म व कर्म होना चाहिए। सारे संसार में सनातन धर्म ही एक ऐसा धर्म है, जिसमें विश्व कल्याण की भावना छुपी हुई है।

राम ने जात-पात नहीं मानकर मानवता का संदेश दिया है। लेकिन कुछ विधर्मी ताकते जात-पात के नाम पर धर्म को तोड़ने का प्रयास कर रही है। ऐसे में हमें जातिवादी नहीं राष्ट्रवादी बनना होगा। दूसरी और यह भी शाश्वत सत्य है, कि व्यक्ति कितना भी धन कमाले, वह केवल धरती पर ही चलता है। मृत्यु के बाद साथ केवल धर्म जाता है- धन नहीं। इसलिए जीवन में अच्छे कर्मो से धर्म इकट्ठा करें, धन नहीं। धर्म सुरक्षित है तो राष्ट्र और समाज सुरक्षित है। **मानव जीवन दुर्लभ है, इसलिए सदैव श्रेष्ठ और अच्छे कर्म करना ही धर्म है।**

- **डॉ.बी. आर. नलवाया जी, मंदसौर (म. प्र.)**

POST SHARED ON JAN 30, 2026
BY BHARTIYAPARAMPARA

परंपरा बनाम अंधविश्वास

हमारी परंपराओं के पीछे छिपे तर्क और सच को जानिए।
अंधविश्वास नहीं, विवेक और समझ के साथ परंपरा को पहचानिए।
QR Code स्कैन करें और सच से जुड़ें।

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका के पुराने सभी अंकों को देखने के लिए किताब के आइकन पर स्पर्श करें !!

158. रीछपति जाम्बवान ने हनुमान जी को कैसे प्रेरित किया?

– रीछपति जाम्बवान ने हनुमान जी से कहा–

"हे वानरजगत के वीर! सम्पूर्ण शास्त्रवेताओं में श्रेष्ठ हनुमान!

तुम एकांत में आकर चुपचाप क्यों बैठे हो?"

"वानर शिरोमणि! तुम्हारा बल, बुद्धि, तेज और धैर्य समस्त प्राणियों में सबसे बढ़कर है। फिर तुम अपने आपको समुद्र लांघने के लिए तैयार क्यों नहीं करते?"

"हे पराक्रमी वीर! तुम अपने असीम बल का विस्तार करो। छलांग मारने वालों में तुम सबसे श्रेष्ठ हो। यह सम्पूर्ण वानर सेना तुम्हारे बल-पराक्रम को देखना चाहती है।"

146. हनुमान जी को ही अंगूठी क्यों दी गई?

– सीता माता द्वारा गिराए गए आभूषणों की स्थिति से यह अनुमान लगाया गया कि रावण का निवास दक्षिण दिशा में है। हनुमान जी दक्षिण दिशा की ओर "हे वानरश्रेष्ठ हनुमान! उठो और इस महासागर को लांघ जाओ, क्योंकि तुम्हारी गति सभी प्राणियों से बढ़कर है।"

रामचरितमानस में तुलसीदास जी लिखते हैं–

कहइ रीछपति सुनु हनुमाना। का चुप साधि रहेउ बलवाना।।
पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना।।
कवन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहीं होइ तात तुम्ह पाहीं।।
राम काज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भयउ पर्वताकारा।।

159. हनुमान जी के पूछने पर जाम्बवान ने क्या सीख दी?

– जाम्बवान ने कहा कि हनुमान जी का कार्य केवल सीता माता की खोज-खबर लेना है। इसके पश्चात श्रीराम जी अपने बाहुबल से वानर सेना सहित राक्षसों का संहार कर सीता माता को वापस ले आएँगे।

160. प्रत्युत्तर में हनुमान जी ने क्या किया और कहा?

– अपने बल का स्मरण होते ही महाबली हनुमान जी ने पर्वत के समान अपने शरीर का विस्तार किया और सिंहनाद करते हुए कहा कि वे एक छलांग में समुद्र को लांघ जाएँगे। ऐसा कहकर महावीर हनुमान जी समुद्र के तट पर स्थित पर्वत की ओर चल पड़े। वाल्मीकि

वाल्मीकि रामायण में इस पर्वत का नाम महेंद्र पर्वत बताया गया है।

✦✦✦

(इस प्रसंग के साथ रामचरितमानस का चौथा सोपान – किष्किन्धा काण्ड – समाप्त हुआ।)

अगला अध्याय - सुन्दरकाण्ड

161. हनुमान जी जब समुद्र लांघ रहे थे तो किसने विश्राम का आग्रह किया?

- मैनाक पर्वत ने– "हे कपिवर! आपने सौ योजन दूर जाने के लिए छलांग मारी है, अतः कुछ पल मेरे शिखरों पर विश्राम करें।"

162. हनुमान जी ने फिर क्या कहा?

- हनुमान जी ने मैनाक पर्वत का स्पर्श करते हुए कहा कि वे उसके आतिथ्य को स्वीकार करते हैं, किंतु उनकी प्राथमिकता भगवान श्रीराम के कार्य को शीघ्र पूर्ण करना है।

रामचरितमानस में– राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहां विश्राम।

163. सुरसा कौन थी?

- सुरसा तेजस्विनी नागमाता थी, जिसे देवताओं एवं महर्षियों ने हनुमान जी की बुद्धि और बल की परीक्षा हेतु भेजा था।

164. सुरसा ने हनुमान जी की परीक्षा कैसे ली?

- सुरसा ने भयंकर राक्षसी का रूप धारण कर समुद्र में हनुमान जी का मार्ग रोका और कहा कि देवों ने हनुमान जी को उसका आहार बनाकर भेजा है तथा उसे ब्रह्मा जी से यह वरदान प्राप्त है कि कोई उसे लांघ नहीं सकता।

165. हनुमान जी ने सुरसा को कैसे जीता?

- हनुमान जी ने कहा कि वे श्रीराम के कार्य से जा रहे हैं और कार्य पूर्ण होने पर स्वयं उसके मुख में प्रवेश करेंगे। सुरसा के न मानने पर हनुमान जी अपने आकार को उसके मुख से दुगना करते चले गए।

अंततः जब सुरसा ने सौ योजन का मुख फैलाया, तब हनुमान जी अंगूठे के समान सूक्ष्म रूप धारण कर उसके मुख में जाकर तुरंत बाहर निकल आए।

इससे प्रसन्न होकर सुरसा ने आशीर्वाद दिया–

"कपिश्रेष्ठ! तुम बल और बुद्धि के निधान हो। श्रीराम के कार्य की सिद्धि हेतु जाओ।"

रामचरितमानस में–

राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान।
आसिष देइ गई सो हरषि चले हनुमान॥

166. सिंहिका राक्षसी कौन थी?

- सिंहिका समुद्र में रहने वाली राक्षसी थी, जो आकाश में उड़ते जीवों की छाया पकड़कर उन्हें ग्रास बना लेती थी। हनुमान जी ने उसका वध कर दिया।

167. लंकानगरी कैसी थी?

- वाल्मीकि के अनुसार समुद्र के मध्य त्रिकूट पर्वत पर स्थित लंकानगरी सोने के परकोटों से घिरी, ऊँचे-ऊँचे श्वेत भवनों से सुशोभित थी।

168. हनुमान जी ने लंका में सीता माता की खोज कैसे की?

- कड़ी सुरक्षा के कारण हनुमान जी ने सूर्यास्त के बाद लघुरूप धारण कर लंका में प्रवेश किया।

169. लंका में प्रवेश करने से हनुमान जी को किसने रोका?

- लंका की रक्षा के लिए नियुक्त भयंकर राक्षसी लंकिनी ने।

170. हनुमान जी ने लंका राक्षसी को कैसे परास्त किया?

- लंकिनी के प्रहार के उत्तर में हनुमान जी ने एक ही प्रचंड मुक्के से उसे धराशायी किया।

171. परास्त होने के बाद लंकिनी ने क्या कहा?

- लंकिनी बोली– "हे कपिश्रेष्ठ! मैं स्वयं लंकापुरी हूँ।
ब्रह्मा जी ने कहा था कि जिस दिन कोई वानर मुझे परास्त करेगा, उसी दिन रावण के विनाश का समय आ जाएगा। आप निर्भय होकर लंका में प्रवेश करें।"

रामचरितमानस में–

बिकल होसि तैं कपि के मारे। तब जानेसु निसिचर संघारे॥
तात मोर अति पुन्य बहुता। देखेउं नयन राम कर दूता॥

क्रमशः... (अगले माह)

– **माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राज.)**

ठंड में एक और समस्या
होती है छांव में बैठ जाओ तो,
ठंड लगने लगती है
और धूप में बैठ जाओ तो
मोबाइल का डिस्प्ले
नहीं दिखता ! 😂

ठंड में दिमाग भी पावर
सेविंग मोड पर चला
जाता है—
सोचो कम,
ओढ़ो ज़्यादा! 🤣

ठंड में सबसे तेज़ दौड़,
इंसान तब लगाता है
जब नहाने का पानी
ठंडा निकल जाए! 🏃‍♂️😂

ठंड में अलार्म बजता है,
दिल कहता है— उठ जा,
और रजाई कहती है—
कल से पक्का 😜

सर्दियों में चाय का प्यार
इतना बढ़ जाता है कि
बिस्कुट नहीं मिले तो
भी चलेगा, पर
चाय दोबारा चाहिए!
☕😆

ठंड में सबसे ज्यादा
एक्टिव कंबल होता है—
जैसे ही उठने का सोचो,
वो और कस के
पकड़ लेता है! 😂

आज के समय में रिश्तों की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि वे निभाए तो जा रहे हैं लेकिन महसूस कम किए जा रहे हैं। मोबाइल स्क्रीन, सोशल मीडिया की चमक और व्यस्त जीवन शैली ने संबंधों को औपचारिकताओं तक सीमित कर दिया है। जन्मदिन की शुभकामनाएं एक संदेश तक सिमट गई और दुख-सुख की साझेदारी **"देख लिया, बात करेंगे"** जैसे वाक्यों में उलझ कर रह गई है। रिश्ते अब ज़िम्मेदारी कम और बोझ अधिक लगने लगे हैं।

ऐसे माहौल में भी बुआ-मामा जैसे रिश्तों की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। गर्मी की छुट्टियां हों या कोई लंबा अवकाश बच्चों के मन में सबसे पहले यही इच्छा होती है कि वे बुआ या मामा के घर जाएं। वहां उन्हें अनुशासन से ज़्यादा अपनापन, और नियमों से ज़्यादा आजादी मिलती है। **निस्वार्थ प्रेम और भावनात्मक सुरक्षा ही रिश्तों की असली ताकत है** जो आजकल नदारद नजर आती है।

बुआ-मामा के रिश्ते हमें यह याद दिलाते हैं कि **संबंध केवल खून के नहीं, भावनाओं के धागों से जुड़े होते हैं।**

अगर यही संवेदनशीलता चाचा-ताई, मौसी-मौसा, दादा-दादी जैसे अन्य नातों में भी बनी रहे तो रिश्तों का क्षरण रोका जा सकता है। **समस्या रिश्तों की कमी नहीं, समय और संवेदना की अल्पता है।** आज ज़रूरत है कि **हम रिश्तों को निभाने के बजाय जीना सीखें।**

औपचारिकता की दीवार तोड़कर संवाद बढ़ाएं, **छोटे-छोटे मिलन को महत्व दें** और बच्चों को भी रिश्तों की गर्माहट से परिचित कराएं। ऐसा करने से न केवल सामाजिक माहौल में आपसी मेलजोल बढ़ेगा बल्कि सामूहिक परिवार की अवधारणा भी मजबूत होगी।

याद रखना चाहिए रिश्ते तभी जीवित रहते हैं जब उन्हें रस्मों की बजाय दिल से सींचा जाए।

- अमृतलाल मारू जी, 'रवि', इन्दौर (मध्यप्रदेश)

प्रकृति के कुछ नियम ऐसे हैं जो पूर्णतः सत्य और अटल हैं। हमारी **आँखों पर जैसे लेंस** होते हैं, संसार हमें वैसा ही दिखाई देता है। यदि **खेत में बीज न बोए जाएँ, तो प्रकृति उसे अपने आप घास-फूस से भर देती है।** ठीक उसी प्रकार, यदि मन में सकारात्मक विचार न भरे जाएँ, तो नकारात्मक विचार स्वतः ही अपनी जगह बना लेते हैं।

यह भी जीवन का एक गहरा सत्य है कि **जिसके पास जो होता है, वह वही बाँटता है।**
सुखी व्यक्ति सुख बाँटता है और दुःखी व्यक्ति दुःख। ज्ञानी ज्ञान बाँटता है, भ्रमित व्यक्ति भ्रम, बलवान बल बाँटता है और भयभीत व्यक्ति भय।
किसी ने बहुत सुंदर कहा है– **जीवन में जो कुछ भी हमें प्राप्त हुआ है, उसे पचाना सीखना चाहिए।** क्योंकि–

भोजन न पचे तो रोग बढ़ते हैं, धन न पचे तो दिखावा बढ़ता है,
बात न पचे तो चुगली बढ़ती है, और प्रशंसा न पचे तो अहंकार बढ़ता है।
निंदा न पचे तो शत्रुता बढ़ती है, राज़ न पचे तो संकट बढ़ता है,
दुःख न पचे तो निराशा बढ़ती है, और सुख न पचे तो पाप बढ़ता है।

जिस प्रकार हंस जल में से केवल मोती चुनता है,
उसी प्रकार जीवन में हमें अनेक दृश्य और
परिस्थितियाँ मिलती हैं। परंतु हमें क्या चुनना है–
यह हमारी सोच, हमारे विचार और हमारे चिंतन-मनन पर निर्भर करता है।

हे परमेश्वर 🙏 हमें यह सामर्थ्य दें कि हम जीवन में अच्छाइयों को ग्रहण करें, स्वयं का और अपने प्रियजनों का जीवन सुखी और शांत बना सकें।
हर बुराई से दूर रहकर चलें हम, जितनी भी मिले, भली ही ज़िंदगी मिले।
किसी से किसी का वैर न हो, मन में प्रतिशोध की भावना न हो।
हम सदैव नेक मार्ग पर चलें, और भूलकर भी कोई भूल न हो।

सबका जीवन शांति, प्रेम और सुख से परिपूर्ण रहे– यही ईश्वर से प्रार्थना है।
– मधु अजमेरा जी, ग्वालियर (मध्यप्रदेश)

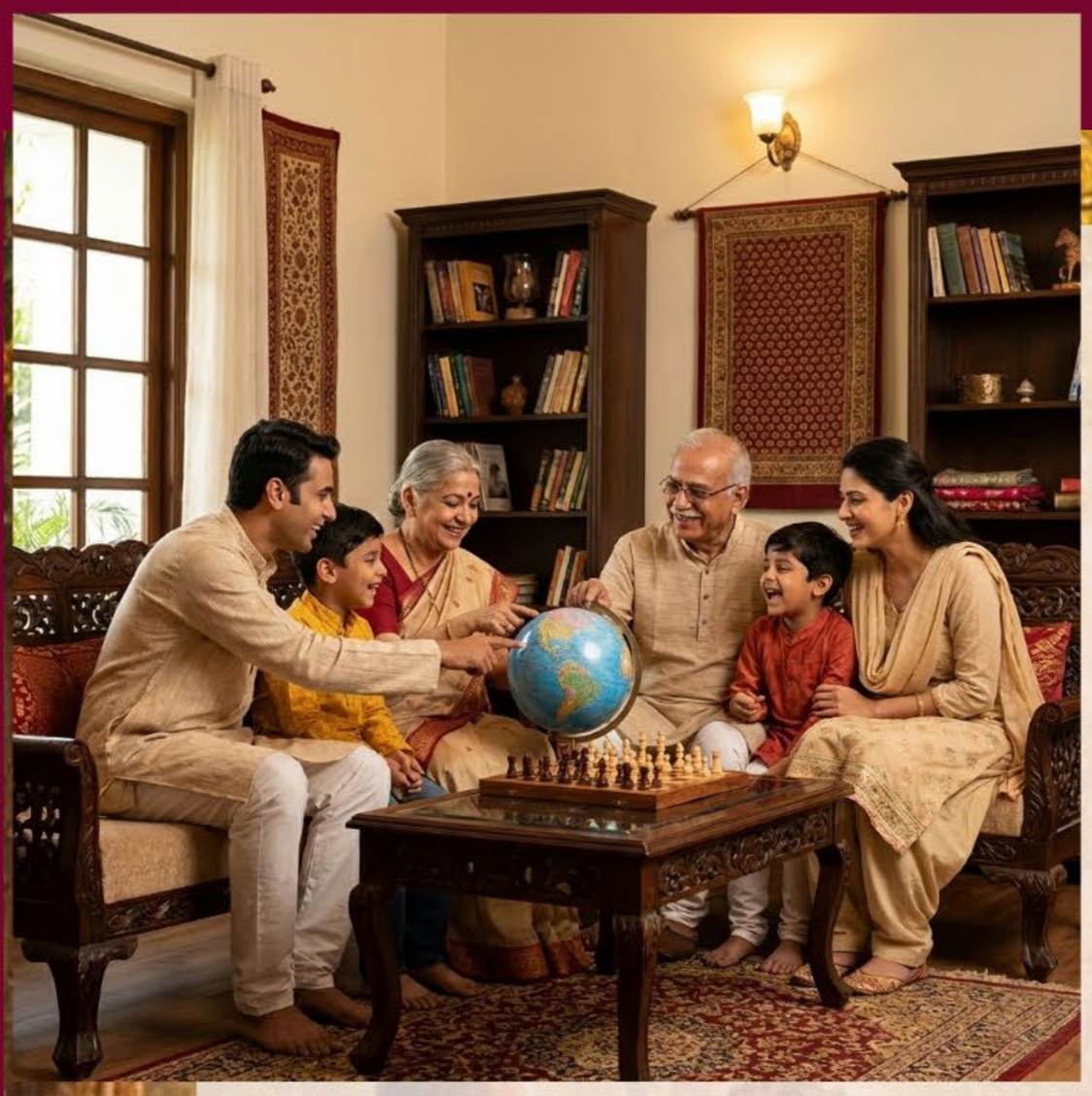

संवाद संस्कृति: बच्चों को गलत निर्णय लेने से रोक सकती है

हाल ही में दिल्ली के एक 16 वर्षीय किशोर द्वारा आत्महत्या की दुखद घटना समाज में संवादहीनता की बढ़ती समस्या की ओर गंभीर संकेत देती है। **यदि शिक्षक, माता-पिता या परिवार के सदस्य बच्चों की बातों को धैर्यपूर्वक सुनें और संवाद का खुला वातावरण बनाएं**, तो ऐसी अनेक घटनाओं को रोकना संभव है। बाल मनोविज्ञान स्पष्ट रूप से बताता है कि बच्चों की भावनाओं, दुविधाओं और आंतरिक संघर्षों को समझने के लिए **संवाद संस्कृति** अत्यंत आवश्यक है।

बच्चे अत्यंत संवेदनशील होते हैं। वे अनेक अच्छे-बुरे अनुभव चाहकर भी अक्सर अभिव्यक्त नहीं कर पाते। भय, संकोच या डांट की आशंका के कारण वे अपने मन की बात छुपा लेते हैं। ऐसे में **परिवार और शिक्षक की जिम्मेदारी है कि वे बच्चों के लिए ऐसा वातावरण तैयार करें, जहाँ वे बिना डर, झिझक या मूल्यांकन की चिंता के अपनी समस्या, गलती, पीड़ा या अनुभव स्वतंत्र रूप से साझा कर सकें।**

ध्यान रखने योग्य बात है कि **बच्चे 'उपदेश' से कम और 'पर्यावरण' से अधिक सीखते हैं।** यदि घर में संवाद को एक नियमित आदत के रूप में अपनाया जाए, परिवार के सदस्य एक-दूसरे की बात ध्यानपूर्वक सुनें, तो बच्चे स्वाभाविक रूप से अपना सुख-दुख आगे बढ़कर साझा करने लगते हैं। घर में प्रतिदिन 10–15 मिनट का **"फैमिली-टाइम"** बच्चों में विश्वास, सुरक्षा और आत्मीयता की भावना विकसित करने में अत्यंत प्रभावी हो सकता है।

जब बच्चा कुछ बताता है, तो तुरंत प्रतिक्रियाएँ देना, जैसे **"तुमने ही किया होगा", "यह तो गलत है", "ऐसा क्यों किया?"** - उसके आत्मविश्वास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। बेहतर है कि बच्चों को धैर्यपूर्वक अपनी बात पूरी करने दें। इससे उनमें निष्पक्ष संवाद, भरोसा और खुलापन बढ़ता है। जो बड़े हैं, **मार्गदर्शक की भूमिका** में हैं, उन्हें **'पहले सहानुभूति, फिर सलाह' के सिद्धांत** पर चलना चाहिए। सामान्यतः भावनात्मक समर्थन के बाद दिया गया मार्गदर्शन अधिक प्रभावी और स्वीकार्य होता है। इससे बच्चा सच बोलने में सहजता महसूस करता है और परिवार पर उसका भरोसा मजबूत होता है। बच्चों की निजता का सम्मान अत्यंत महत्वपूर्ण है। **बच्चा जो भी व्यक्तिगत बात साझा करता है, उसे परिवारजनों,**

रिश्तेदारों या दोस्तों के बीच चर्चा या मजाक का विषय न बनाएं। बच्चे की बातों की गोपनीयता बनाए रखना ही विश्वास की वास्तविक नींव है। जब बच्चा देखता है कि उसकी निजी भावनाएँ सुरक्षित हैं, तो वह आगे भी परिवार के साथ खुलकर संवाद करना सीखता है।

सिर्फ गलतियों पर ध्यान देने से संवाद कमजोर होता है; इसलिए आवश्यक है कि ईमानदारी, साहस, प्रयास, मित्रता, सत्य बोलने जैसी सकारात्मक बातों पर तुरंत प्रशंसा दी जाए। **सराहना बच्चे की आत्म छवि को मजबूत बनाती है और भविष्य में भी संवाद के लिए प्रेरित करती है।**

आज के **डिजिटल युग में संवाद की आवश्यकता और बढ़ गई है**, क्योंकि मोबाइल, इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल गैजेट्स बच्चों के जीवन में गहराई से प्रवेश कर चुके हैं। माता-पिता को सहज शैली में समय-समय पर पूछना चाहिए-**"क्या ऑनलाइन कुछ उलझन भरा देखा?", "किसी का बुरा बोलना या मैसेज परेशान करता है क्या?", "स्कूल में किसी दोस्त या शिक्षक ने कुछ ऐसा कहा जो तुम्हें अच्छा या बुरा लगा हो?"** ऐसे सौम्य प्रश्न बच्चों को बाहरी दुनिया के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं को साझा करने के लिए प्रेरित करते हैं। वस्तुतः **संवाद एक ऐसा पुल (ब्रिज) है जो माता-पिता और बच्चों के बीच प्रेम, सुरक्षा, भरोसा और पारदर्शिता को मजबूत करता है।** जब हर बच्चा यह विश्वास पूर्वक कह सके-**"मम्मी-पापा, मुझे आपसे एक जरूरी बात करनी है..."** - तब समझिए कि संवाद संस्कृति ने अपनी भूमिका सफलतापूर्वक निभा दी है।

अतः **आत्महत्या जैसी गंभीर समस्याओं की रोकथाम में परिवार, शिक्षक और मित्रों के बीच विकसित संवाद-संस्कृति सबसे बड़ा, सबसे प्रभावी और सबसे मानवीय अस्त्र है।**

- प्रो.(डॉ.) मनमोहन प्रकाश, शासकीय होलकर विज्ञान महाविद्यालय, इंदौर (मध्यप्रदेश)

जीवन को बसंत-सा सुंदर, सुखद और आकर्षक बनाइए।
सकारात्मक सोच के साथ निरंतर प्रगति-पथ पर बढ़ते जाइए।
जीवन में सर्वोपरि हैं—सकारात्मक विचार और अनुशासन।
सकारात्मक सोच के सप्तवर्णों से अपने जीवन का आँगन सजाइए।

- भजन लाल हंस जी बघेल, पलवल (हरियाणा)

1) सूखे मेवों का पौष्टिक सलाद

सामग्री: अंजीर – 5 नग, मुनक्का – ½ कप, किशमिश – ½ कप, बादाम – ½ कप, मूंगफली के दाने – 1 कप, अखरोट – 10 नग, काजू – 10–15 नग, खजूर – 100 ग्राम, हरा नारियल – 1 (कद्दूकस किया हुआ)

विधि: अंजीर, मुनक्का, किशमिश, बादाम, अखरोट, काजू और मूंगफली के दानों को अलग-अलग रात भर पानी में भिगो दें।

अगले दिन सभी भीगी हुई सामग्री को एक बर्तन में मिलाएँ। खजूर के बारीक टुकड़े करें और ऊपर से कद्दूकस किया हुआ हरा नारियल डालकर अच्छी तरह मिश्रण तैयार करें। यह पौष्टिक सलाद महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर भगवान जी को भोग अर्पित करें और स्वयं भी इसका आनंद लें।

यह सलाद विटामिन, मिनरल, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन B12 एवं खनिज लवणों से भरपूर एक संपूर्ण आहार है।

2) खजूर के पौष्टिक लड्डू

सामग्री: नरम खजूर – 250 ग्राम, भुनी हुई मूंगफली – 200 ग्राम, भुनी हुई तिल या खसखस – 50 ग्राम, भुने हुए सूखे मेवे – 100 ग्राम, देसी घी – 1 टीस्पून

विधि: खजूर के बीज निकालकर उन्हें मिक्सर में पीस लें।

मूंगफली के दानों को दरदरा पीसें।

सूखे मेवों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें। अब सभी सामग्री को एक बाउल में डालकर आटे की तरह अच्छी तरह गूंथ लें। हाथों में थोड़ा-सा घी लगाकर छोटे-छोटे लड्डू बनाएँ। लड्डुओं को भुने हुए तिल या खसखस में रोल कर लें और ठाकुर जी को भोग अर्पित करें।

ये लड्डू विटामिन A, B, C, K, फाइबर, पोटैशियम से भरपूर हैं, कब्ज नाशक, स्त्रियों में दूध वर्धक, त्वचा के लिए लाभकारी तथा स्नायु संस्थान को मजबूत करने वाले होते हैं।

✨ **इस महाशिवरात्रि पर स्वास्थ्य और भक्ति—दोनों का संगम करें** ✨

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

जिंदगी में
मुस्कुराने
की वजह
खुद ढूंढनी
पड़ती है...!

फिर से प्रयास करने से
कभी मत घबराना
क्योंकि इस बार
शुरुआत शून्य से नहीं,
अनुभव से होगी...!

सुख के लालच
में ही नये
दुःख का जन्म
होता है...!

कोई हाथ से
छीनकर ले
जा सकता है...

पर नसीब से नहीं...!

खुद को बदलने का सबसे
तेज तरीका है,
उन लोगों के साथ रहना जो
पहले से ही उस रास्ते पर हैं
जिस पर आप
जाना चाहते हैं...!

हम अपने व्यक्तित्व
का निर्माण, किसी
अन्य के अवसरों एवं
आजादी को छीनकर
नहीं कर सकते...!

बसंत ऋतु में प्रकृति नटी अपने संपूर्ण सौंदर्य के साथ इठलाने लगती है। संपूर्ण सृष्टि में सरलता व्याप्त हो जाती है एवं रचनात्मक प्रक्रियाएं प्रारंभ हो जाती हैं। **ऋतुराज वसंत का स्वागत करने फागुन दौड़ा चला आता है।** ऐसा लगता है बावरा हो बौंरा गया हो और मस्ती के आलम में इतरा रहा है। यह शोख-चंचल मौसम जोकर दिखाएं वह कम है। इसकी लीलाएं अजब है, गजब की मादकता वाले इसके अंदाज हैं। इसके आते ही पलाश के वनों में आग सी लग गई है जिसकी सुर्ख लालिमा से वातावरण दग्ध हो गमक उठा है। मंद मंद सुगंधित पवन बहता है, हवा सांय सांय करती खिल उठती है मानो नश्तर से चुभो देती है। वन उपवन एक मादक गंध से आपूरित हो उठे हैं। कोकिला की मीठी तान आम्र कुंजो में गूंज उठी है। कुहू कुहू कर बोल रही है **सुन रे भैया मोर वन उपवन** में देखो इत-उत छाई घटा निराली लतर-बदर फूलों से देखो झूम रही है डाली डाली। कलियां अभिनंदन कर रही हैं। वासंती चूनर ने अपनी डोली फैलाई है कि **प्रकृति कई रंगों में रूपमती हो मुस्कुरा** उठी है।

सर्दी के दिन दूर हो गए हैं और गर्मी की ऋतु ने अपना आंचल फैलाना आरंभ कर दिया है। चारों ओर सौंदर्य का पान करने अंबर भी मानो झुक सा गया है और **धरती मां भी इंद्रधनुषी आभा** पा खिल उठी है। **गुनगुन करते भौंरे** भी घूम घूम कर सारंगी बजा रहे हैं और **पत्तों को भी नर्तन** सिखा रहे हैं। **तितलियां भी अपनी सतरंगी घाघर** पहनकर इधर-उधर डोलती फिर रही हैं। यह फागुन ही तो है जिसके आगमन के साथ ही नई चेतना का संचार होता है। गोचर अगोचर को फागुन ने अपने मनोहरी पाश में भर लिया है और कोंपलों पर फूटा है नया लावण्य **कठफोड़वा आम के वृक्ष में अपनी कारीगरी से कोटर** बना रहा है और **हरियल तोतों की बारात** बागों में आकर बैठ गई है। गुलाब की क्यारी में बहार ने अपना डेरा जमा लिया है और मैदानों में छिटक उठी है नन्हे नन्हे गुलाबी, बैंगनी ऊदे फूलों की आहट, धरा रंग उठी है मदमस्त प्रणय और उत्पत्ति के रंगों में।

वसंत के आते आते ही मन उमंग और उल्लास से परिपूर्ण होने लगता है। पपीहे का राग प्रेम के रंग में ढल कर हल्की हंसी बिखेर रहा है और पीहू पीहू की रट लगाए मदमाती ऋतु को प्यार की पहचान दे रहा है। **सरसों तो पूरी की पूरी पीत रंग की चुनरिया ओढ़े सज उठी है।** खेत खलिहानों में मंथर गति से चलती बयार के डैनो पर सवार अठखेलियां करता **फागुनराग अपने साथ मनुहार की बेला का उपहार** लाया है।

फल स्वरूप गांव गांव डप की थाप पर थिरकते तन श्रृंगार के गीत गाने लगते हैं। कहीं दूर अलगोजे पर कोई गा रहा है फागुनी गीत और आसमान से उतर रहा है इस मदमस्त मधुमास का मादक संगीत। कौन सा फूल या कली इससे अछूती है और प्रस्फुटित हो सुगंध से सराबोर ना हुई है। गांव, डगर, चौपालों में जन-जन के मन में रंजकता के रंग मस्ती में डूब गए हैं। इसी का सानिध्य पा **माधवी और मोगरे की जुगलबंदी** का क्या कहना और मौलश्री भी अपने आप झर रही है। अचेतन पहाड़ी भी नए उल्लास से नहा उठी है। आम भौंरा रहा है और नए पत्तों की पांत जरा सी हवा से भी हिल डुल कर लहक-लहक जाती है। **प्रेम का पहाड़ा याद** करने की उम्र में लहलहाते खेतों के द्वार पर दस्तक दी है और फागुन कहां नहीं है कोई कह नहीं सकता।

मस्ती के आलम का नशा नव संचार कर रहा है। धरती के, वृक्षों के पोर -पोर चटकने लगे हैं। **उज्जवल वासंती वातावरण** और चारों तरफ शीतल मद-सुगंध से पूरित पवन की अठखेलियों के कारण रंगीनियों और भी बढ़ जाती हैं। जब फागुनी बयार चलती है तो तन मन भी फागुनी होकर नाचने लगता है और फिर रंग रंगीले, चटकीले रंगों से भिगोती इठलाती, इतराती, बलखाती होली फिर से द्वार खटखटाते ए पहुंचती है। चौपाल में भी खनक की आवाज गूंज उठती है, **ढोलक की थाप, ढोल की पद चाप और झाल-मंजीरो की झंकार** से वातावरण से वातावरण खुशियों की डोर लिए झूम उठता है। मस्तों की टोली हंसी -ठिठोली करती इधर-उधर घूम रही है।

बच्चे बूढ़े, जवान सभी **होली का स्वागत** बिना किसी भेदभाव के विविध रंगों में सजकर, संगीत की स्वर माधुरी और नृत्य की थिरकन के साथ मस्ती के आलम में खो जाते हैं। नीले -पीले, लाल-गुलाबी रंगों की बहार आई है। मुट्ठी भर भर अभी गुलाल के हथेलियां से भरे बादल इधर-उधर उड़ते फिर रहे हैं। **गांव-नगर, सड़कों गलियों, चौबारों में धूम मची है और खिलखिलाती होली आ पहुंची है।**

टेसू के फूलों से भरे रंगीन हौंदो ने चारों ओर शोर मचाया है और **राग रंग बरसाने** वाला होली का निराला त्यौहार आ गया है। खुशबू से महकती **मेवों भरी गुंजिया की थाली** के सौंधेपन से सब का मन ललचाया है और **बादाम युक्त केसरिया ठंडाई** की ठंडक सबके मन को भाई है। **सिलबट्टे पर पिसती भांग** कहां पीछे रहने वाली है उसने भी अपने पहलू खोले हैं। इस ठनक भरे पर्व का अंदाज अनोखा है और **सर-सर-सर करती पिचकारी** ने सबको स्नेह के रंग से भिगो दियाहै। **मेलजोल की रोली ने होली** को एक नया विश्वास दिलाया है और इस बात की पुष्टि की है कि **भाईचारे के गुलाल से हम मिलजुल कर होली खेले**।

स्नेहा रूपी पिचकारी सदा जीतती रही है और इस कारण घृणा, द्वेष, चापलूसी, मक्कारी के रूप में आई हर बात टिक नहीं पाई है। सहज एकता की मिठास से हमारी झोली भरी हुई है। उल्लास की मधुर भावना हमारे अंग में समोही हुई है।

कामना यही है की आपस की दूरी मिट जाए और जीवन हो सुखमय सुहावना, गीतों की रसधार बहे और हर मन में सद्भाव जगा दें। **होलिका दहन में हम सब बुराइयों का दहन कर लेवें। फिर ना उठ पाए कुरीतियां ऐसा समां बंध जाए।** यह रंग ही हम सब पर बरसाएं और सारी रंगों से बढ़कर **प्रेम का रंग** ही हम सब मिलकर खेले और इस रंग में रंग कर उसे पर दूसरा रंग न चढ़ने दे ऐसा संकल्प हम आज लें ताकि **जीवन के सफर में सदा रंग बिरंगी खुशहाली बरसती रहे।**

- ड़ॉ. मंजु मुकेश चोपड़ा जी, पुणे (महाराष्ट्र)

MXCREATIVITY
Brand Creation & Digital Marketing

Your Partner in Digital Growth

We build strong brands with
creative design and smart strategy.
From websites to digital marketing, we help your business grow online.

Simple solutions. Powerful results.

Design. Digital. Growth.

OUR SERVICES

- Branding
- Graphic Design
- Website Design
- Website Development
- Digital Marketing
- Bulk WhatsApp Messaging

CONTACT US AT

8080518745
www.mxcreativity.com | info@mxcreativity.com

भारतीय परम्परा ™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

ॐ नमः शिवाय शान्ताय
कारणत्रय हेतवे।
निवेदयामि भक्त्या
शिव-पार्वत्यै नमो नमः॥

73030 21123
www.bhartiyaparampara.com